चीनी सहायता प्राप्त बांध को म्यांमार सरकार ने रोका

भारत डोगरा

हाल ही में उमड़ते जन विरोध के सामने झुकते हुए म्यांमार की सरकार ने चीन की सहायता से बन रही म्यितसोन बांध परियोजना पर कार्य रोक दिया है। इस निर्णय का विश्व स्तर पर पर्यावरणविदों व नदियों की रक्षा के अभियानों ने स्वागत किया है।

इस बांध से जो जलाशय बनना था वह उतना ही बड़ा होता जितना कि पूरा सिंगापुर देश है। इस क्षेत्र में सांस्कृतिक, धार्मिक व राष्ट्रीय महत्त्व के स्थान है। अपनी जैव विविधता के लिए यह क्षेत्र विश्व भर में बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इस बांध के बनने से म्यांमार की नदियों के पर्यावरण को बहुत क्षति होती। निचले क्षेत्र में नदी का प्रवाह कम होने से खेती-किसानी की क्षति के साथ समुद्र के खारे पानी का प्रवेश होने की भी पूरी संभावना थी। इस योजना से विशेषकर कचिन समुदाय पर बहुत प्रतिकूल असर पड़ता व उनका उमड़ता असंतोष राजनीतिक स्तर पर बहुत संवेदनशील मुद्दा माना जा रहा है।

इस बांध के पीछे सबसे बड़ी ताकत चीन की मानी जा रही थी। इस बांध परियोजना से बनने वाली अधिकांश बिजली की खपत चीन में ही होनी थी। चीन ने इर्राक्यदी क्षेत्र में सात बांधों के लिए अरबों डॉलर उपलब्ध करवाए हैं या इसका वायदा किया है। यह माना जा रहा है कि इस

परियोजना को वापस लिया गया है तो इस आधार पर इसी ृंखला के अन्य 6 बांधों को भी वापस लेना चाहिए। म्यांमार के कुछ पर्यावरण आंदोलनों ने इसकी मांग भी की है।

दूसरी ओर, चीन इस परियोजना पर कार्य रुकने से काफी नाराज़ बताया जा रहा है। इस निर्णय ने क्षेत्र के शक्ति संतुलन को भी बदला है। अब म्यांमार चीन पर अत्यधिक निर्भरता के खतरे को समझ रहा है तथा अन्य देशों से संपर्क बढ़ाना चाह रहा है। लोकतंत्र की ओर बढ़ते कदम को भी इस बदलाव से जोड़कर देखा जा रहा है।

इस उदाहरण से यह भी पता चलता है कि जन-समुदाय द्वारा विरोध का सामना करने वाली बड़ी परियोजनाओं को विदेशी ताकतों द्वारा समर्थन नहीं मिलना चाहिए। उम्मीद है कि म्यांमार की कुछ अन्य विवादास्पद परियोजनाओं पर भी अब पुनर्विचार हो सकेगा। ***(स्रोत फीचर्स)***